B.A. Part → 3, Paper → 5 [SOCIAL PSYCHOLOGY].

Topic :→ Leadership [Definition & Meaning,].
(Session 2022-25)

प्रश्न :→ नेतृत्व को परिभाषित करते हुए इसकी प्रकृति की विवेचना कीजिए। नेतृत्व में कौन-कौन से गुण होने की आवश्यकता है।
[Define Leadership and discuss its nature. What traits are essential in Leadership?].

अथवा :— नेतृत्व की विशिष्ट प्रकृति को दर्शाइए। एक नेता के प्रमुख गुणों की चर्चा कीजिए। [Bring out the specific nature of Leadership. Discuss the chief ~~attri~~ attributes of a Leader].

Answer :→ हम सबके लिए नेता और नेतृत्व अति परिचित शब्द हैं क्योंकि केवल मानव समाज में ही नहीं पशु समाज में भी इनका दर्शन हमें कितने ही रूप में होता है। राजनैतिक क्षेत्र से लेकर सामाजिक क्षेत्र तक, आर्थिक जीवन से लेकर कलात्मक जीवन तक और अन्तर्देशीय रंग-मंच से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय रंगभूमि तक कितने ही प्रकार के और कितने ही स्तर के नेताओं के बारे में हम सुनते, पढ़ते या स्वयं देखते हैं। इसलिए नेता और नेतृत्व हमारे लिए इतने साधारण शब्द बन गये हैं कि इनका प्रयोग हम कभी-कभी तो दूसरों का मजाक उड़ाने के लिए भी कर बैठते हैं। "अरे भाई इनका अब क्या कहना? ये तो ऊँचे दर्जे के नेता बन गये हैं।" — इस प्रकार के कथन में प्रशंसा नहीं व्यंग्य ही अधिक झलकता है। इसीलिए नेता और नेतृत्व के अर्थ को भी हम कभी गम्भीरता से विचारते नहीं। जो अगुवा बने वही नेता है, यही हमारे लिए नेता की साधारण परिभाषा है। पर सामाजिक मनोविज्ञान में नेता और नेतृत्व अत्यन्त महत्वपूर्ण अवधारणाएँ हैं। प्रथमतः तो इसलिए कि ये विशिष्ट प्रकार के व्यक्तित्व व विलक्षण व्यवहार प्रतिमान को अध्ययनार्थ प्रस्तुत करते हैं, और द्वितीयतः इसलिए कि समाज में अन्य व्यक्तियों को प्रभावित, निर्देशित तथा नियंत्रित करने में नेतागण एक उल्लेखनीय पार्ट अदा करते हैं। अतः नेता और नेतृत्व की वैज्ञानिक विवेचना आवश्यक है।

नेता वह व्यक्ति है जो कि एक समूह के सदस्यों को उस सीमा तक प्रभावित करने में सफल है कि उसके (नेता के) निर्देश व नियंत्रण को वे सदस्य स्वीकार कर लें। नेता की स्थिति को नेतृत्व कहते हैं। और भी स्पष्ट रूप में नेतृत्व नेता के व्यक्तित्व की वह स्थिति है जो कि एक क्षेत्र-विशेष के

अन्तर्गत अपने अनुयायियों के व्यवहार को प्रभावित करते हुए उन लोगों के मार्गदर्शक व नियंत्रक के रूप में क्रियाशील हो।

नेतृत्व का अर्थ व परिभाषा [Meaning and Definition of Leadership]:→

श्री पीगर [Pigors] के अनुसार, "नेतृत्व उस परिस्थिति का वर्णन करता है जिसमें एक व्यक्ति किसी पर्यावरण में इस प्रकार स्थान ग्रहण किये हुए हो कि उसकी इच्छा, अनुभूति तथा अन्तर्दृष्टि एक सामान्य हित की पूर्ति के हेतु दूसरों को निर्देशित तथा नियंत्रित करे" [Leadership is a concept - to describe the situation when a personality is so placed in the environment that his will, feeling and insight direct and control others in pursuit of a common cause".].

लॉपीयर तथा फान्सवर्थ [Lapiere and Farnsworth] के अनुसार "नेतृत्व वह व्यवहार है जो दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार को उससे कहीं अधिक प्रभावित करता है जितना कि उन दूसरे लोगों का व्यवहार नेता को प्रभावित करता है।" [Leadership is behaviour that affects the behaviour of other people more than their behaviour affects that of the leader.].

श्री पीगर ने अपनी परिभाषा में इस बात पर बल दिया है कि नेतृत्व के दो प्रमुख आधार है :- एक तो नेता का स्वयं का व्यक्तित्व और दूसरा अन्य लोग। अपने व्यक्तित्व की कुछ विशेषताओं के कारण उसकी स्थिति कुछ इस प्रकार की होती है कि वह दूसरों को अपनी इच्छा, अनुभूति तथा अन्तर्दृष्टि के अनुसार निर्देशित व नियंत्रित कर सकता है और वह ऐसा करने में इसलिए सफल होता है क्योंकि उसके द्वारा सामान्य हित की पूर्ति हो रही है या होना सम्भव है, ऐसा लोग समझते हैं।

सर्वश्री लॉपीयर तथा फान्सवर्थ ने भी नेतृत्व के दो आधारों का उल्लेख किया है :- एक तो नेता और दूसरे उसके अनुयायी। नेतृत्व में इन दोनों का सम्बन्ध इस प्रकार का होता है कि दोनों ही एक दूसरे को प्रभावित करते हैं:- अन्तर केवल मात्रा का होता है और वह इस रूप में कि नेता अपने अनुयायियों को जितना अधिक प्रभावित करता है

उसकी तुलना में अनुयायी (followers) नेता को कम प्रभावित का पाते हैं। वह नेता इसीलिए है कि दूसरों को अधिक मात्रा में प्रभावित का सकने की क्षमता अपने में रखता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नेतृत्व नेता के व्यक्तित्व की वह स्थिति है जो कि एक क्षेत्र-विशेष के अन्तर्गत अपने अनुयायियों के व्यवहार को प्रभावित करते हुए उन लोगों के मार्गदर्शक व नियंत्रक के रूप में क्रियाशील हो।

नेतृत्व की विशिष्ट प्रकृति (Specific Nature of Leadership)

→ उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से ही नेतृत्व की विशिष्ट प्रकृति स्पष्ट हो जाती है, फिर भी उसे सिलसिलेवार हम इस प्रकार प्रस्तुत का सकते हैं।—

① नेतृत्व के दो प्रमुख आयाम हैं:— एक तो नेता स्वयं और दूसरा उसके अनुयायी (followers). ये एक-दूसरे के पूरक हैं और एक के बिना दूसरे का अस्तित्व सम्भव नहीं। यदि अनुयायी नहीं हैं, तो नेता किस बात का, किस काम का? वह नेतृत्व करेगा किस पर? नेतृत्व का कोई आयाम तो होना चाहिए, और वह आयाम अनुयायी होते हैं।

② नेतृत्व की एक और विशिष्ट प्रकृति यह है कि नेता और अनुयायी दोनों ही एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। साधारणतया यह समझा जाता है और ऐसा प्रतीत भी होता है कि केवल नेता ही अन्य लोगों को प्रभावित करता है, उस पर औरों का प्रभाव नहीं पड़ता है। यह गलत धारणा है। नेता और अनुयायी का सम्बन्ध पारस्परिक प्रभाव का है। अन्तर केवल इतना है कि नेता का प्रभाव अनुयायियों पर अधिक पड़ता है। उस प्रभाव की तुलना में अनुयायी अपने नेता को कम प्रभावित कर पाते हैं। इसका कारण यह है कि नेता के कुछ विशिष्ट गुण होने के कारण उसका व्यक्तित्व अधिक प्रभावशील होता है।

③ नेतृत्व की प्रकृति की तीसरी उल्लेखनीय बात यह है कि नेता के व्यक्तित्व में कुछ विशिष्ट गुण और क्षमताएँ होती हैं जिसके कारण वह न केवल दूसरों का ध्यान अपने तरफ आकर्षित करने में सफल होता है अपितु उनसे सम्मान व श्रद्धा भी पा लेता है। अनुयायियों के दिलों

में नेता का एक प्रतिष्ठामूलक पद (Prestige position) होता है।

④ नेतृत्व किसी व्यक्तिगत स्वार्थ का नहीं, अपितु सामान्य हितों की पूर्ति की दिशा में क्रियाशील होता है। नेता को सामान्य हितों का ध्यान रखना पड़ता है क्योंकि उसी के आधार पर उसे दूसरों से सम्मान व श्रद्धा मिलती है। स्वार्थी नेता का नेतृत्व अधिक दिन तक टिक नहीं सकता।

⑤ नेतृत्व अपने में अनुयायियों के स्वेच्छापूर्वक समर्पण का भाव निहित होता है; अर्थात् बलपूर्वक या डरा-धमका कर दूसरों को अपना अनुयायी बनाया जा सकता है, पर इस प्रकार का सौदा स्थायी नहीं हो सकता। सफल नेतृत्व वही है जिसमें कि लोग स्वेच्छा से अपने नेता के प्रति सम्मान व श्रद्धा का भाव पनपायें तथा उसके निर्देश व नियंत्रण को स्वीकार कर लें।

⑥ नेतृत्व की एक और उल्लेखनीय विशेषता यह है कि नेतृत्व का एक निश्चित कार्य-क्षेत्र होता है। इसका तात्पर्य यह है कि एक ही व्यक्ति सम्भवतः सभी क्षेत्रों का नेता नहीं बन सकता। खेल के मैदान का नेता राजनैतिक मैदान में सहज ही 'आउट' हो जाएगा अर्थात् असफल रहेगा, क्योंकि दोनों ही क्षेत्रों के लिए अलग-अलग क्षमता, योग्यता व विशेषताओं की आवश्यकता होती है। एक ही व्यक्ति सभी चीजों में विशेषज्ञ (Master of all) नहीं हो सकता। इसीलिए नेतृत्व को एक विशेष कार्य-क्षेत्र के संदर्भ में ही समझा जा सकता है। केवल नेता कहना ही पर्याप्त नहीं 'किस चीज का नेता' (Leader of what) अर्थात् नेता का कार्य-क्षेत्र क्या है यह कहना भी जरूरी है।